दिनांक 21.04.2012

सूचनार्थ / प्रकाशनार्थ

सम्पादक महोदय,

विश्व अर्थ दिवस पर ग्लोबल ग्रीन्स द्वारा की जाएगी ''गंगा गिरि''

''ग्लोबल ग्रीन्स'' संस्था द्वारा ''विश्व अर्थ दिवस'' के उपलक्ष्य में धरती को बचाने के संकल्प में प्रमुख रूप से गंगा एवं यमुना के मिलन स्थल संगम को बचाने का संकल्प लिया गया है। ''विश्व अर्थ दिवस'' पर कई कार्यक्रमों में जनजागरूकता कार्यक्रम के साथ ही साथ गाँधीगिरि के तर्ज पर गंगा गिरी करने का संकल्प लिया गया। ''ग्लोबल ग्रीन्स'' एवं ग्रीन कुम्भ मिशन के ब्रांड अम्बेस्डर ''दुकान जी'' ने लोगों को गंगा जल हाथ में देकर संकल्प दिलाया कि वो गंगा में गंदगी नहीं फैलाएंगे एवं अपने परिवार के लोगो एवं मित्रों को भी ऐसा नहीं करने देंगे। पॉलीथिन के प्रयोग न करने का संकल्प भी लोगों से संस्था के लोगों ने गंगा जल देकर कराया। गंगा गिरी का मतलब यही ह्वै कि अपनी बात अब दबाव स्वरूप मनवानी है लेकिन प्रेम व अहिंसा से । दुकान जी ने यह भी कहा कि यदि **NGRBA** को कानूनी रूप नही मिला तो आन्दोलन होगा।''दुकान जी'' ने कहा कि शीघ्र ही वो गंगा रक्षा के लिए गंगा में खड़े होकर तप भी करेंगे।

संस्था के अध्यक्ष मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि ''विश्व अर्थ दिवस'' का महत्व तभी है जब लोग स्वच्छ जल व स्वच्छ वायु पा सकें धरती हरी–भरी एंव नदियाँ जल से भरी हों। समय सोचने का है आज अन्धाधुन्ध विकास ने जल, जंगल, जमीन और जीव सभी को ख़तरें में डाल दिया हैं। पर्यावरण का विनाश तेजी से हो रहा है ग्लोबल वार्मिगं जलवायु परिवर्तन से आज ग्लेशियर पिघल रहें हैं, गंगा–यमुना जैसी पवित्र नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं। कई नदियाँ ते सूख गई हैं। बाँधों के द्वारा बिजली बनाये जाने से नदियों का प्रवाह कम हो गया है। पहाड़ो पर पेड़ों की कमी होने से हरियाली कम हो रही है। पेड़ों के कटने से शहर कंक्रीट के बनते जा रहे हैं। कुएं तालाब नष्ट हो रहें हैं, भूमिगत जल स्रोत सूख रहें हैं। जल, वायु ,ध्वनि, मृदा प्रदूषण बढ़ता जा रहा हैं प्रकृति की हरितिमा नष्ट होती जा रही है।

अब वक्त आ गया है कि हम चेत जाएं। वैश्वीकरण व संचार युग में ग्लोबल विलेज की अवधरणा अपनायी जा रही है। अब विकास के उस माडल को अपनाया जाए जो सम्पोषित विकास **(Sustanable Development)** पर आधारित हो। विकास इस प्रकार से हो जिसमें प्रकृति को संरक्षित करते हुए विकास किया जाए जो गाँधी जी की विचारधारा पर आधारित हो। गाँधी जी का यह कहना आज भी पुर्णतः सत्य है कि प्रकृति ने मनुष्य की आवश्यकतानुरूप प्रदान किया है मनुष्य की लालसा की पूर्ति के लिए व्यवस्था नहीं की है।

संजय पुरूषाथी ने कहा कि हम सब लोगों को अब एक होकर मिशन ''ग्लोबल ग्रीन्स'' के तहत गंगा–यमुना को संरक्षित कर संगम को बचाना होगा। हरियाली लाने के लिए वृहद वृक्षारोपड़ करना होगा। जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग के विकल्प स्वरूप एक मात्र ग्लोबल ग्रीन की अवधारणा अपना कर पूरे विश्व को हरा–भरा बनाना होगा। हमें अपने संयुक्त प्रयास से भारत को विश्व की प्रथम महाशक्ति बनाने का दृढ़ संकल्प लेना होगा तभी हम वास्तविक अर्थ दिवस मना सकेगें।

स्वामी आनन्द गिरि ने भी ''विश्व अर्थ दिवस'' पर सभी को गंगा यमुना संरक्षण के लिए आगे आने का आह्वन किया। गंगा ऐक्शन परिवार के पदाधिकारियों ने भी ''ग्लोबल ग्रीन्स'' के साथ मिलकर कार्य करने की बात की। दीपक श्रीवास्तव, अर्पणा श्रीवास्तव ने स्नेह संस्था की ओर से लोगों को मानवाधिकार की रक्षा करते हुए–**Save Erath - Save Child** की बात की। गोविन्द सक्सेना ने भी ''विश्व अर्थ दिवस'' पर इलाहाबाद को ''क्लीन सिटी ग्रीन सिटी'' का नारा दिया। मानसी संस्था की अध्यक्ष साधना श्रीवास्तव ने पृथ्वी की तुलना नारी शक्ति से की और कहा यदि हम नारी को सशक्त करेंगे तो हम अपनी धरती को ही मजबूत बनाएंगे ।''ग्लोबल ग्रीन्स'' द्वारा आयोजित इस गंगा गिरी कार्यक्रम में प्रमुख रूप से आर्दश तिवारी, डॉ0 बी0के0 द्विवेदी, हसन नकवी, संजय श्रीवास्तव, आशीष मालवीय,डा0शैलेन्द्र पंकज, हरेन्द्र दूबे, सुधांसु श्रीवास्तव, मंजू पाठक, राजीव रतन भार्गव, नवीन श्रीवास्तव, प्रशांत त्रिपाठी,संन्दीप सेन, अनुपम ललोरिया अवधेश निषाद,अवधेन्द्र प्रताप सिंह चन्दन कुमार एंव अन्य गंगा भक्त प्रमुख रूप से शामिल रहे।

भवदीय
आशीष मालवीय
ग्लोबल ग्रीन्स